बी0एल0 एग्रो के अद्भुत विकास की कहानी एवं राज

टर्न ओवर की वार्षिक विकास दर :– 230 प्रतिशत
रोजगार सृजन की वार्षिक विकास दर :– 116 प्रतिशत

बैल कोल्हू, मोहन धारा, बैलेन्स लाईट, अविरल धारा, नरिष डिलाईट जैसे उत्पादों को उपलब्ध कराने वाली कम्पनी बी. एल. एग्रो आयल्स लि. की स्थापना, श्री घनश्याम खण्डेलवाल, ने जो आई0आई0ए0 बरेली चैप्टर के चेयरमैन भी है, ने वर्ष 1986 में की थी जब उन्होने 'बैल कोल्हू' नामक ब्रांडेड सरसों तेल का उत्पादन करना शुरू किया था।

बी. एल. एग्रो के विकास की कहानी प्रबन्ध निदेशक, श्री घनष्याम खंडेलवाल ने अपने परिश्रम और प्रयास की कलम से लिखी है। खण्डेलवाल कहते हैं कि प्रारम्भ से ही उन्होंने उपभोक्ता को शुद्धतम खाद्य तेल उपलब्ध कराने का दृढ़ निश्चय लिया था।

इसी को ध्यान में रखते हुये बि. एल एग्रो आयल्स लि. अपने उत्पादों की गुणवत्ता में कभी समझौता नहीं करती है।

बी.एल.एग्रो. आयल्स लि. के इस मूल दर्शन के कारण उनके उत्पादों का मूल्य ग्राहकों के विश्वास से दृढ़ होता चला जा रहा है। उद्योगों में यह व्यापक तौर पर एक ज्ञात तथ्य है कि इसके बाजार में आने के बाद से नियामक प्राधिकरणों द्वारा 'बैल कोल्हू' के हजारों नमूने लिये तथा जांचे गए हैं लेकिन उनके परीक्षणों में कोई भी नमूना नाकाम नहीं रहा है।

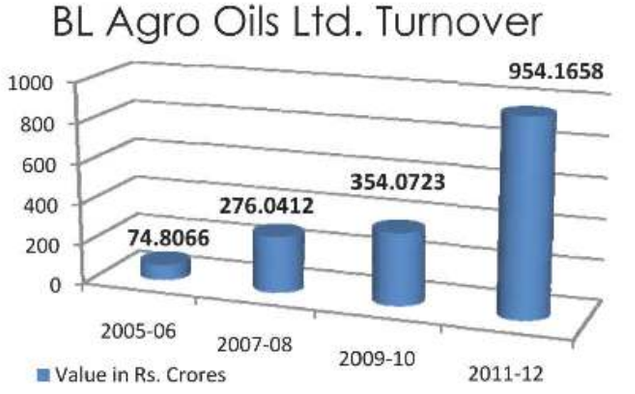

किसी भी खाद्य तेल ब्रांड की असल उपलब्धि यही है, जो कम्पनी प्रबन्धन की प्रतिबद्धता तथा उसका दृढ़ आचारण का आईना है। आज के समय में उत्तर भारत की एक नामित खाद्य तेल कम्पनी बी. एल. एग्रो. सरसों रिफाइंड तथा अन्य तेलों के कई लोकप्रिय ब्राडों के परिशोधन, गुणवत्ता नियंत्रण, पैकेजिंग तथा मार्केटिंग पर विशेष ध्यान देती है।

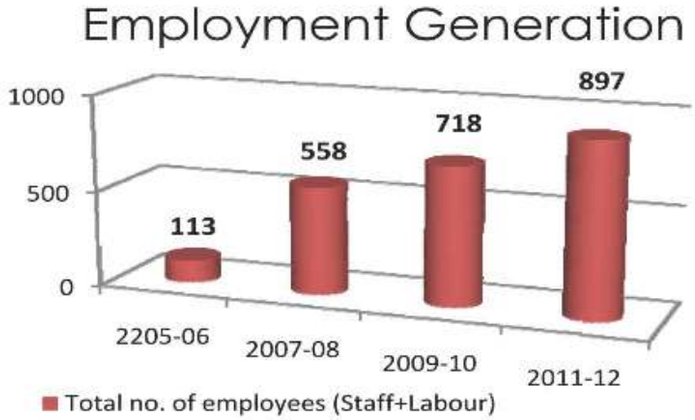

बी. एल. एग्रो. आज जिस मुकाम को हासिल कर चुकी है उससे यही प्रतीत होता है कि कम्पनी सदा कठोर मेहनत, ईमानदारी एवं एक निश्चित उद्देश्य से संचालित की गई है। प्रबन्धन ने अवसरों को भांप कर अपनी क्षमता बढ़ाने तथा तकनीकि उन्नयन में सुसंगत निवेश किया। मात्र 14 वर्षों की अवधि में बी. एल. एग्रो ने आश्चर्यजनक ढंग से अपनी पैकेजिंग क्षमता को 150 गुना बढ़ा लिया। 1988 में एक कमरे में स्थापित 5 टीपीडी (टन प्रतिदिन) की हाथ से होने वाली पैकेजिंग इकाई से विकसित कर कम्पनी ने बरेली के बाहरी छोर स्थित पारसखेड़ा औद्योगिक क्षेत्र में एक अत्याधुनिक सेमीऑटोमैटिक प्लांट स्थापित कर लिया है। यह प्लान्ट आज 750 टीपीडी की भारी क्षमता तक बढ़ चुका है।

10000 वर्ग मीटर के विस्तार में फैले नये प्लांट ने बी एल एग्रो को अपनी रिफाइनरी स्थापित करने योग्य भी बनाया। 2005 में शोधन क्षमता 50 टीपीडी से बढ़कर 2009 में 150 टीपीडी और उसके बाद 2012 में 300 टीपीडी हो गयी। 2011 तक बी एल एग्रो के भंडार (गोदाम) की क्षमता 6000 टन थी। पिछले एक वर्ष में कंम्पनी ने अपनी भंडारण क्षमता लगभग तिगुनी बढ़ा ली है, आज यह 16000 टन हो गयी है।

बी एल एग्रो के बेजोड़ विकास के लिए जिम्मेदार एक और तथ्य है कि उत्पादन क्षमताओं में

more on PG 16

बी०एल० एग्रो के अद्भुत विकास की कहानी एवं राज...contd.. from PG-7

बहु–स्तरीय वृद्धि का तालमेल उत्पाद की मांग में वृद्धि से लगातार कम्पनी ने बनाये रखा।

बी एल एग्रो के कार्यकारी निदेशक, आशीष खंडेलवाल बताते हैं, "कम्पनी उत्तर प्रदेश एवं उत्तरखंड के अधिकांश भागों में स्पष्ट रूप से एक अगुआ की स्थिति में है। एक अल्प अवधि में, बैल केल्हू ने दिल्ली एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के बाजार का एक बड़ा हिस्सा अर्जित किया है। बढ़ती मांगों के साथ वितरण नेटवर्क दिनों– दिन फैल रहा है।"

घनश्याम खंडेलवाल ने अपनी संततियों, साथ ही साथ कर्मचारियों को सौंपे कई निगम– मूल्यों में से एक है कि 'समुदाय के आदर और भरोसे के बिना सफलता और विकास का कोई अर्थ नहीं है।' उनके सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए बी एल एग्रो आज एक सर्वाधिक जिम्मेदार निगम–नागरिक भी है। सी एस आर की पहल के अनुरूप, बी एल एग्रो स्थानिय शिक्षण संस्थाओं के 100 से अधिक छात्रों को औद्योगिक प्रशिक्षण के अवसर मुहैया कराती है। कम्पनी क्षेत्र में कला एवं संस्कृति के प्रोत्साहन में भी बहुत सक्रिय है तथा ऐसी गतिविधियों के लिए वित्तीय सहयोग देती आ रही है।

बी एल एग्रो आयल्स पर्यावरण संरक्षण को लेकर भी बहुत संवेदनशील है। औद्योगिक अपशिष्ट के शोधन हेतु एक सुविधायुक्त शोधन संयंत्र लगाने के अतिरिक्त, बायलर में नवीनीकरण योग्य ईंधन का इस्तेमाल, छोटे बायलरों तथा रात की प्रकाश व्यवस्था के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग करते हुए, कम्पनी समय –समय पर पौधरोपण अभियान सरीखे विभिन्न पर्यावरणीय कार्य भी करती है। ■